डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(संकलित)

अंग्रेजी में एक कहावत है-

कुछ व्यक्ति जन्मजात महान होते हैं, कुछ महानता प्राप्त कर लेते हैं और कुछ पर महानता लाद दी जाती है ।

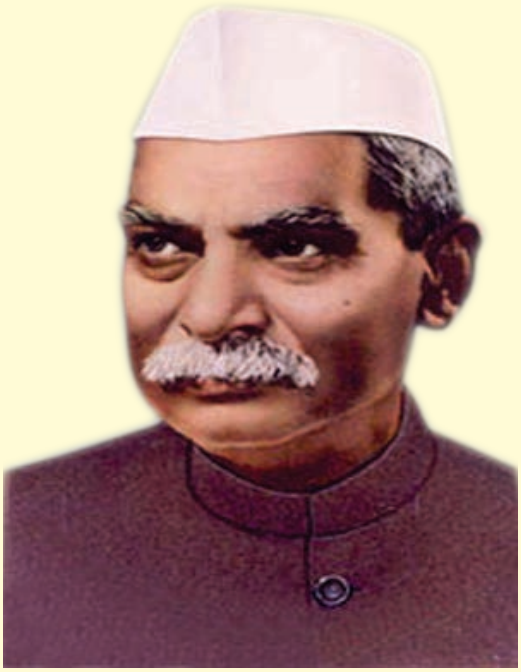

यदि हम इस उक्ति को आधार मानकर राजेंद्र बाबू का विश्लेषण करें तो पता चलता है कि राजेंद्र बाबू उन व्यक्तियों में से नहीं थे जो किसी धनी परिवार में जन्म लेकर अपने को महान साबित करने की कोशिश करते थे । और न ही महानता उन्हें विरासत में तोहफे के रूप में मिली । वास्तव में यह उनके महान गुणों का ही प्रभाव है जो उन्हें पारिवारिक और सार्वजनिक जीवन में सफलता प्रदान कर महान घोषित करता है ।

अपने शील, स्वभाव, सामान्य वेशभूषा, बौद्धिक प्रखरता, सरलता, नैतिकता, सहज गंभीरता के कारण ही राजेंद्र बाबू को स्वतंत्र भारत का प्रथम राष्ट्रपति चुना गया । वह जो कुछ कहते थे, उसे अपने वास्तविक जीवन में अपनाते भी थे । उनके इसी विशिष्ट गुण से जुड़ी एक घटना तब की है, जब राजेंद्र बाबू राष्ट्रपतित्व के बाद अपने शेष जीवन को सर्वोदय मार्ग पर राष्ट्र एवं संपूर्ण मानवता की

सेवा में बिताने का संकल्प करते हुए सदाकत आश्रम में रहते थे । वहाँ वह बच्चों को पढ़ाने व उन्हें नैतिक शिक्षा का ज्ञान देने का कार्य करते थे । एक बार राजेंद्र बाबू बच्चों को परिश्रम के महत्व के विषय में बता रहे थे- प्रत्येक व्यक्ति को श्रम करके अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए और श्रम के बाद जिस फल की प्राप्ति होती है, उस पर सबसे पहले परिश्रम करने वाले व्यक्ति का अधिकार है । जैसे बगीचे में फल लगाने वाले को अपनी पसंद के अनुसार चुनकर फल खाने का अधिकार होना चाहिए । यदि कोई उस व्यक्ति का यह अधिकार छीनता है तो वह शोषण करने वाला, निर्दयी होगा ।

सभी बच्चे बाबू जी की इस बात को बहुत ध्यान से सुनकर उसे समझ रहे थे, क्योंकि वे बाबू जी के प्रति श्रद्धा और विश्वास रखते थे । लेकिन इन बच्चों में एक ऐसा बच्चा भी था जो उस आश्रम में नया आया था । उसे लग रहा था बाबू जी की यह बात केवल एक उपदेश मात्र है । वास्तविक जीवन में कोई भी इस उपदेश का स्वयं पालन नहीं करता होगा । उसके मन में वह विचार आया कि, क्यों न बाबू जी को परखा जाए । देखें, वह वास्तव में स्वयं श्रम करने वाले व्यक्ति को उसका अधिकार देते हैं या नहीं ।

बाबू जी प्रतिदिन स्नान से पहले नीम की दातुन करते थे । इसलिए कोई भी उनके लिए दातुन तोड़ लाता था । अगले दिन वह बालक बाबू जी के लिए दो दातुन लेकर पहुँचा । उसमें से एक साफ सुथरी थी, दुसरी सख्त उबड़-खाबड़ थी । उसने दातुन बाबू जी के सामने करते हुए कहा ''दातुन ले लीजिए'' । राजेंद्र बाबू ने बालक की ओर देखा ।

वह बालक साफ दातुन को बाबू जी को देता हुआ बोला - ''आप इसको ले लीजिए । दूसरे का मैं प्रयोग कर लूँगा क्योंकि यह ज्यादा ठीक नहीं है ।'' बाबू जी ने तुरंत साफ दातुन बालक को देते हुए कहा कि नहीं तुमने मेहनत की है और अच्छी दातुन पर पहला अधिकार तुम्हारा है ।

बालक को बहुत हैरानी हुई । उसने बाबू जी की ओर ध्यान से देखा और अचानक वह रोने लगा । बाबू जी उसे रोते देखकर हैरान हुए । वे समझे नहीं कि ऐसा क्या हो गया जो बालक रोने लगा । उन्होंने उस बालक को शांत करके जब कारण पूछा तो वह बाबू जी के चरणों में बैठते हुए बोला - ''मुझे माफ कर दीजिए । मैंने आज बहुत बड़ी गलती की है जो आपको सामान्य व्यक्ति समझा । वास्तव में आप तो देवतुल्य हैं, आप जो कहते हैं उसका स्वयं भी पूरा पालन करते हैं ।'' उसने रोते हुए सारी बात बाबू जी को बता दी । यह सब जानकर बाबू जी हँसे और बोले-''इस बात से तुम रो रहे हो । वास्तव में इससे तुम्हारे बुद्धिमान और तर्कशील होने का पता चलता है । देखो, हमारी कही बात दूसरे पर तभी प्रभाव डालती है जब हम स्वयं उस बात का अपने जीवन में पालन करते हैं । यदि तुम यह देखते कि मैं जो तुम लोगों से कहता हूँ उसका पालन स्वयं नहीं करता, तो कोई भी बच्चा मेरी बात को नहीं सुनता । मुझे खुशी है कि मैं तुम्हारी परीक्षा में खरा उतरा ।''

बाबू जी की इन बातों को सुनकर वह बालक बहुत प्रभावित हुआ और उनके चरणो में झुक गया ।

शब्दार्थ :

बौद्धिक प्रखरता - बुद्धि तेज होना;

विशिष्ट - विशेष, खास;

देवतुल्य - देवता के समान;

विश्लेषण - तथ्यों के आधार पर किसी बात को अलग करना;

विरासत - पूर्वजों से प्राप्त

अनुशीलनी

१. समझो और लिखो :

(I) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति पद से अवकाश लेने के बाद कहाँ रहने लगे ?

(ii) आश्रम में बाबूजी क्या करते थे ?

(iii) राजेन्द्र बाबू ने बच्चों को आश्रम के बारे में क्या बताया ?

(iv) नये बच्चे ने बाबूजी को परखने के लिए क्या किया ?

(v) बालक की इस हालत पर बाबूजी ने उसे क्या कहा ?

(vi) स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे ?

(vii) राष्ट्रपति पद से अवकाश लेने के बाद राजेन्द्र बाबू ने क्या संकल्प किया ?

भाषावोध : -

२. रेखांकित शब्दों का विलोम शब्द लिखकर वाक्यों को फिर से लिखो :

(I) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को <u>परतंत्र</u> भारत का राष्ट्रपति बनाया गया ।

(ii) <u>धनी</u> परिवार में जन्म लेने से ही कोई महान नहीं बन जाता ।

(iii) मेहनत का फल छीनने वाला <u>निर्दयी</u> होता है।

(iv) दूसरा दातुन सख्त था ।

(v) वास्तव में तुम बुद्धिमान हो ।

३. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताओ और उनके प्रयोग से वाक्य बनाओ :-

खुशी -

स्वभाव -

पसंद -

मेहनत -

संकल्प -

४. निम्नलिखित शब्दों के संज्ञा-रूप लिखो :-

पारिवारिक - .....

सार्वजनिक - .....

बुद्धिमान - .....

सरल - .....

५. निम्नलिखित शब्दों की मात्रा ठीक करके लिखो :-

लिजिए - ..... नहिं - .....

इसलीए - ..... हेरानी - .....

जिवन - ..... नेतिक - .....

बाबु - ..... क्योंकी - .....

पत्रलेखन

१. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक दिन की छुट्टी के लिए आवेदन पत्र लिखिए :

सेवा में,

श्रीयुत प्रधानाचार्य जी,

रेवेन्शा कॉलजिएट स्कूल, कटक

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं पिछली रात से ज्वर से पीड़ित हूँ । इसलिए मैं आज विद्यालय में उपस्थित न हो सकूँगा । आपसे प्रार्थना है कि कृपया एक दिन की छुट्टी प्रदान करके मुझे कृतार्थ करें ।

दिनांक-

आपका आज्ञाकारी छात्र,

राम गोपाल सिंह

पंचम कक्षा

२. अपने मोहल्ले की सफाई के लिए नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखो :

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी,

महानगर निगम, भुवनेश्वर

महोदय,

निवेदन है कि सत्यनगर में सफाई का समुचित प्रबंध नहीं है । नगर के कई भागों में मलेरिया का प्रकोप बढ़ रहा है । हमारे क्षेत्र में सड़कों पर गंदे कूड़े की ढेरियाँ पड़ी हुई हैं जो मच्छरों को जन्म देती हैं । कृपया आप तुरंत इस इलाके के निरीक्षक को भेजें, जिससे कि मोहल्ले की सफाई हो सके । इस इलाके के निवासी आपको अपनी ओर से पूरा सहयोग देने का आश्वासन देते हैं ।

भवदीय,

दिनांक - १९.७.२०११

अमरेन्द्र प्रधान

१०/३०, सत्य नगर

भुवनेश्वर

३. अपने मित्र को अपनी बहन की शादी में सम्मिलिन होने का निमत्रण-पत्र लिखो:

पत्र मित्र को (व्यक्तिगत पत्र)

१५, चित्रकूट सदन

ब्रह्मपुर,ओड़िशा

दिनांक-१९.७.२०११

प्रिय मित्र,

सप्रेम नमस्कार,

तुम्हें यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि मेरी बहन अमृता का शुभ विवाह राउरकेला निवासी श्री राजेन्द्र मिश्र की पुत्री से दिनांक ५ अक्टूबर सन् २०११ को

होना निश्चित हुआ है । इस शुभ अवसर पर मैं तुम्हें सप्रेम आमंत्रित करते हुए आशा करता हूँ कि तुम इस मांगलिक कार्य में अवश्य भाग लोगे । विश्वास है कि तुम मुझे निराश नहीं करोगे ।

तुम्हारा मित्र,

अविनाश मिश्र

अभ्यास

१. आपको किसी पुस्तक प्रकाशक से कुछ पुस्तकें मँगानी हैं । इसके लिए एक आदेश पत्र लिखो ।

कटक

दिनांक.....

सेवा में,

व्यवस्थापक

.....

.....

.....

प्रिय महोदय,

निम्न पुस्तकें वी.पी.द्वारा .....

.....

.....

१. हिन्दी भारती भाग - ०१ - १ प्रति

२. हिन्दी भारती भाग - ०२ - १ प्रति

पुस्तकों का बिल उचित कमीशन काटकर बनाएँ, पुरानी अथवा गलत किताबें लौटा दी जायेंगी, जिनके व्यय की जिम्मेदारी आप पर ही होगी ।

आपका

भवतोष गुप्ता

.....

.....

२. मान लो कि आप भुवनेश्वर, जयदेव विहार, मोहल्ला नं ३० में रहते हैं । आपके नाना दिल्ली में दरियागंज पर २०५ नं मकान में रहते हैं । अपने नाना को दशहरे के अवसर पर भुवनेश्वर आने के लिए एक पत्र लिखो:

नाना जी को पत्र

दिनांक.....

.....

पूज्यवर,

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

आपका,

.....

.....

.....

पता

टिकट

प्रेषक,

.....

.....

.....

.....

सेवा में,

.....

.....

.....

.....